कलीसिया अध्याय 28

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 11:29-14:35**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 11:29-14:35) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(4) मत्ती 5:23-24**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 12:1-50**

परिचय। बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए मिलकर **यूहन्ना 12:1-50** का अध्ययन करें। यूहन्ना 12:1-50 में बैतनिय्याह में यीशु मसीह के अभिषेक, यरूशलेम में उसके विजय प्रवेश और उसकी खोज करने वाले यूनानियों से उसकी मुलाकात और यीशु को अस्वीकार करने वाले यहूदियों को अविश्वास।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 12:1-50 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. मरियम द्वारा यीशु का अभिषेक।

यह घटना लूका 7 में लिखी घटना के समान नहीं है, लेकिन यह घटना और मत्ती 26 व मरकुस 14 में बखान की गयी घटनाएं एक ही हैं। शमौन कोढ़ी के घर में यीशु मसीह के सम्मान में एक रात्रि भोज का आयोजन किया गया था। इस्राएल की रीति के अनुसार, मेहमान भोजन मेज़ के पास टेक लगाकर लेट जाया करते थे। मार्था और लाज़र की बहन, मरियम, ने यीशु के ऊपर महंगे इत्र का मर्तबान उण्डेल दिया, जिसने उसे सिर से लेकर पांव तक तर कर दिया। फिर उसने यीशु के पांव को अपने बालों से धोया। पूरा घर इत्र की सुगन्ध से भर गया।

इस घटना में हम एक तरफ तो मरियम की *उदारता* को देखते हैं और दूसरी तरफ यहूदा का *स्वार्थ।* यहूदा ने मरियम के इस काम को पैसों की बर्बादी करार दिया। उसने हिसाब लगाकर बताया कि उस इत्र का दाम एक व्यक्ति की एक वर्ष की कमाई थी(अर्थात 300 दीनार, और 1 दीनार की कीमत एक दिन की कमाई थी)! गुस्सा होने वालों में कुछ और चेले भी शामिल थे। मरियम ने जिस तरफ भी अपनी निगाह दौड़ाई उस तरफ घूरा और स्वीकृत निगाहों से देखा जा रहा था। केवल यीशु ही उसके बचाव में खड़े हुए। केवल यीशु ही उसकी मनसा को समझे और उसने कहा, "उसने तो यह इत्र मेरे दफन के लिए जमा किया था।"

यीशु के किसी चेले से बढ़कर, मरियम इस बात को महसूस कर पाती थी कि शत्रु जल्द ही मार देगें। हालांकि यीशु ने कई बार अपनी मृत्यु के बारे में बताया था(मरकुस 8:31; 9:31; 10:33-34), लेकिन मरियम यीशु की बातों को शायद सबसे अच्छी तरह सुन रही थी। यहूदी रीति के अनुसार, मृत्यु के पश्चात, देह पर मसाले और इत्र लगाया जाता और लिनेन के कपड़े से लपेट दिया जाता था। लेकिन मरियम यीशु मसीह को जीवित रहते हुए सम्मानित करना चाहती थी। अत: मरियम ने यीशु को दफनाने की तैयारी के रूप में उस पर सारा इत्र उण्डेल दिया। यीशु ने उसके इस उपहार को स्वीकार करते हुए कहा कि संसार में जहां कहीं उसके बारे में चर्चा की जाएगी वहां मरियम के द्वारा किये गये इस काम का भी जिक्र जरूर से किया जाएगा।
निश्चय तौर पर यीशु गरीबों की चिन्ता करता था, और वह बेकार में चीज़ों को बर्बाद करना पसन्द नहीं करता। लेकिन मरियम के द्वारा किया गया काम व्यर्थ नहीं था! यह यीशु के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने के लिए किया गया कार्य था, यह कार्य इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण मृत्यु की तैयारी था! यह कार्य यीशु द्वारा अपनी मृत्यु पर की गयी भविष्यद्वाणी पर विश्वास करने का कार्य था, जिसके द्वारा उसने यह सहमति

दर्ज की वास्तव में यीशु जल्द ही मर जाएगें। यीशु मसीहियों को शिक्षा देते हैं कि वे धन खर्च किये जाने को लोगों के सामान्य दृष्टिकोण से अलग हटकर देखते हैं।

12:12-19

खोज 2. **यरूशलेम में यीशु का विजय प्रवेश।**

दो तथ्य मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

(1) यीशु ने दर्शाया कि वह सारी परिस्थितियों पर अपना नियन्त्रण रखता है। महासभा अर्थात सिन्हेद्रिन ने यीशु को फसह के पर्व में मारने की योजना नहीं बनायी होती, लेकिन यीशु मसीह द्वारा यरूशलेम में विजय प्रवेश के कारण उन्हें यीशु को मारने की योजना को पहले अन्जाम देना पड़ा। यरूशलेम में प्रवेश करने के लिए द्वारा यीशु ने यह साबित व प्रदर्शित कर दिया कि वह अपने प्राणों को अपनी इच्छा से देने के लिए आया है।

(2) यीशु ने दिखाय की वह मसीह, शान्ति का राजकुमार है(यशायाह 9:6)। लादू के बच्चे पर सवार होकर उसका यरूशलेम में प्रवेश करना जर्कयाह 9:9 की भविष्यवाणी का पूरा होना था। अर्थात यरूशलेम के लोग अपने राजा को लादू के बच्चे पर सवार होकर आते हुए देखेंगे। एक तरफ यदि घोड़े पर सवार होने का अर्थ युद्ध करना था उसी प्रकार गधे पर सवार होने का शान्ति के समाचार के रूप में देखा जाता था! एक लादू के बच्चे पर सवार होकर, यीशु ने प्रगट किर दिया कि वह मसीह है, लेकिन वह को राजनैतिक या सैन्य मसीहा नहीं था जैसा कि यहूदी लोग उम्मीद कर रहे थे, लेकिन वह तो बाइबल का मसीह था! उसने दिखाया कि वह कोई राजनैतिक लड़ाई जीतने के लिए नहीं परन्तु वह लोगों को शान्ति प्रदान करने के लिए आया है। वह परमेश्वर और पापी मनुष्य के बीच मेल कराने के लिए अपने प्राणों की आहूति देगा।

कदम 3. प्रश्न।	**व्याख्या**
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये यूहन्ना 12:1-50 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। ***लिखें:*** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।) ***चर्चा करें।*** (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

12:20

प्रश्न 1. **फसह के पर्व के दौरान यरूशलेम में आराधना करने आये लोगों में यूनानी क्यों मौजूद थे?**

ध्यान दें। शताब्दियों तक यहूदी लोग आस पास के देशों में जाकर रहने लगें या उन्हें बन्धुवा बनाकर दूर दराज जगहों पर ले जाया गया था। वहां जाकर उन्होंने परमेश्वर की आराधना करने तथा पुराने नियम का अध्ययन करने के लिए अराधनायलों का निर्माण किया। अन्यजातियों में से जो लोग एकेश्वरवाद की (जो

अन्यजातियों में बहुईश्वरीयवाद के बिल्कुल विपरीत था)आकर्षित हुए वे यहूदी मत को अपनाने लगे। अन्यजाति में से कईयों ने खतना करवाया और सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करने की प्रतिज्ञा की। वे यहूदी बन गये और यहूदियों की सारी जिम्मेदारियों और अवसरों के भागीदार हो गये। उन्हें "नवदीक्षित" कहा गया(प्रेरितों 2:11)। लेकिन उनके अलावा और भी गैर यहूदी लोग थे जिन्होंने खतना नहीं करवाया और उन्होंने यहूदी विधियों को भी नहीं माना उन्हें "परमेश्वर का भय मानने वाला" कहा गया(प्रेरितों 16:14)। उन्हें मन्दिर अर्थात अराधनालय में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी, लेकिन वे बाहरी आंगन तक जा सकते थे। अत: यीशु के समय तक,यहूदियों के रीति रिवाजों ने यहूदियों और गैर यहूदियों कें बीच में एक "विभाजन की दीवार" खड़ी करके रखी(इफिसियों 2:14-15)। बाद में पौलुस इफिसियों की कलीसिया में यहूदी मसीहियों और गैर यहूदियों के बीच "विभाजन लाने वाली बैर की दीवार" की उन धार्मिक विधियों के बारे में बताता है, जिसमें अनेको नियमों और कानूनों को पालन किया जाता है (इफिसियों 2:14-15)।

जो यूनानी, फसह के पर्व में भाग लेने के लिए आये थे वे पूरे हृदय से परमेश्वर का भय मानने वाले थे। हमें यह नहीं पता है कि वे यीशु से क्यों मिलना चाहते थे। हो सकता है कि उन्होंने यूनानियों के ज्ञान पर विश्वास करना छोड़ दिया हो और उन्हें यहूदी मत में आकर भी सच्ची शान्ति नहीं मिल रही थी(1 कुरिन्थियों 1:18-25)। यीशु का जवाब इस बात को प्रगट करता है कि वे यीशु से मिलकर *उद्धार* के बारे में चर्चा करना करना चाहते थे। इन यूनानियों ने अपनी फरियाद फिलिप और इन्द्रियास के द्वारा यीशु तक पहुंचाने का प्रयास किया, क्योंकि यीशु के चेलों वे ही दो ऐसे चेले थे जिनके नाम यूनानी थे। यीशु ने अपने चेलों को जवाब दिया, जिस जवाब को उन्होनें यूनानियों तक पहुंचा दिया।

12:23-24

प्रश्न 2. **जब यीशु ने कहा कि जब तक गेहूँ का दाना मर नहीं जाता तो वह अकेला ही रहता है, तो उसका मतलब क्या था?**

ध्यान दें। जब यीशु ने यूनानियों के प्रश्न का उत्तर दिया उस समय यीशु के चारों ओर यहूदियों की भीड़ खड़ी हुई थी। उनसे कहा "वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मन नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है"। यीशु ने कहा कि उसे "महिमान्वित" करने का समय आ गया है। यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु, उसके मृतकों में से जी उठने, स्वर्ग पर उसके उठा लिये जाने और अन्त में स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के बारे में बात कर रहे थे जहां पर वह अपने पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है।

जिस समय यूनानी लोग प्रसिद्ध और जीवित राजा (मसीह) से मिलने आये, जिसने यरूशलेम में विजयी प्रवेश किया था, यीशु मसीह उसी समय पर अपनी मृत्यु के बारे में बातें कर रहे थे। उसने उनके सामने स्पष्ट कर दिया कि जमीनी मसीह से मिलकर उन्हें कुछ लाभ नहीं होगा। क्योंकि ज़मीनी मसीह को पहले मरना जरूरी है। केवल तभी व स्वर्गीय मसीह के रूप में, उनका उद्धार कर पाएगा। लेकिन अब उसके तकलीफों को सबसे भयानक दौर आ चुका है। यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के बारे में "एक बीज के भूमि पर पड़कर मरने की उपमा देते हुए" बताया।

हर एक किसान इस बात को जानता है कि यदि एक बीज भूमि पर पड़कर नहीं मरता, तो वह पौधा बनकर अपने समान और बीजों को उत्पन्न नहीं कर सकता। एक तरफ यीशु कहते हैं, उसके लिए मरना बहुत

जरूरी है। क्योंकि यदि वह क्रूस पर अपने प्राण नहीं देता है, तो किसी का उद्धार सम्भव नहीं है। और दूसरी तरफ यीशु कहते हैं कि, उसकी मृत्यु का परिणाम जगत में एक विशाल कटनी होगी। यदि वह अपने प्राण देता है तो जगत के बहुत से लोगों का उद्धार हो जाएगा। इसलिए जब यीशु ने बीज के ज़मीन पर गिरकर मरने का उदाहरण देते हुए अपने मरने की बात की, तो वह यह शिक्षा दे रहे थे कि क्रूस पर उसकी वैकल्पिक मृत्यु लोगों के उद्धार के लिए बहुत जरूरी है और इसका संसार के इतिहास पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा।

12:25-26

प्रश्न 3. एक मसीही को संसार में रहते हुए अपने प्राण को क्यों अप्रिय जानना चाहिए?

ध्यान दें। यीशु ने कहा, "जो अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहां मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करें, तो पिता उसका आदर करेगा"।

एक मसीही को अपने प्राण को इसलिए अप्रिय जानना चाहिए क्योंकि केवल ऐसा करने पर ही उसके प्राण का उद्धार हो सकता है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने प्राण को प्रिय जानता है वह अपने जीवन, अपने परिवार और अपने दोस्तों, भौतिक वस्तुओं और सम्पत्ति और अपनी सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को यीशु मसीह से बढ़कर प्राथमिकता देता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्राण का नुकसान उठायेगा अर्थात यीशु मसीह उसका इनकार कर देगा और वह अनन्त दण्ड भोगेगा।

इस पापमय संसार में अपने प्राण को अप्रिय जानने से संबन्धित तीन बातें अति महत्वपूर्ण हैं:

(1) अपने आपे का इनकार करने करना।

जब हमने मिलकर यूहन्ना 12:23-26 देखा, जब हम ने ध्यान दिया कि अपने आपे का इनकार करना यीशु और मसीहियों के लिए भी सत्य है। यूहन्ना 12:23-24 में, बहुत से लोगों को बचाने के लिए यीशु मसीह का *मरना बहुत जरूरी* था। और यूहन्ना 12:25-26 में हम ने देखा कि यीशु के खातिर मसीहियों को भी मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। निश्चित तौर पर, मसीही लोग यह काम अपनी शक्ति से नहीं कर सकते। फिर भी यीशु मसीह और मसीहियों के लिए यह अपना इनकार करने का सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है!

(2) यीशु को प्रथम स्थान देने की शिक्षा।

दूसरे सुसमाचारों में भी यीशु को अपने जीवन में प्रथम स्थान देने की शिक्षा दी गयी है। यीशु की इसी शिक्षा को मत्ती 10:37-39, मरकुस 8:34-38 में और लूका 14:26-33 में कलमबन्द किया गया है। मत्ती 10:37-39 में यीशु ने कहा, "जो माता पिता को *मुझ से अधिक* प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक जानता है वह मेरे योग्य नहीं; और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा"। प्रेरितों 5:29 में पतरस ने अधिकारियों से कहा, "हमारे लिए अच्छा है कि हम मनुष्यों की बात मानने से अच्छा परमेश्वर की बात मानें"। एक मसीही जन को अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में प्रभु यीशु का सर्वप्रथम स्थान देना चाहिए। उसे सर्वोच्च सम्मान अपने माता पिता, या शिक्षक, या अपनी कम्पनी, या सरकार को नहीं वरन यीशु मसीह को देना चाहिए। यदि कभी ऐसी परिस्थिति आ जाए जिसमें यीशु मसीह की आज्ञा और माता पिता, शिक्षकों, कम्पनी या सरकारी अधिकारियों की मांगे आमने सामने

आकर खड़ी हो जाएं तो मसीही जन को बाकि सबकी न मानते हुए यीशु मसीह की आज्ञाओं का चुनाव करना चाहिए।

(3) सेवा में कष्ट उठाना।

यूहन्ना 12:26 में यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहां मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि को मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।" यीशु मसीह का मतलब था कि यदि कोई उसकी सेवा करना चाहता है, तो उसे हर परिस्थिति में मसीह का अनुसरण करना चाहिए, चाहे वह परिस्थिति अपना इनकार करना या क्रूस उठाना ही क्यों न हो। मत्ती 10:39 में "अपना क्रूस लेकर यीशु के पीछे हो लेने" का अर्थ "संसार में परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह की खातिर कठिनाईयों, अस्विकृति, सताव और यहां तक कि मृत्यु सहने के लिए इच्छुक रहना" है। लेकिन मसीहियों को हमेशा अपने मन में रखना चाहिए कि क्रूस का रास्ता मुकुट की ओर जाता है। यीशु ने कहा,"जो कोई मेरे लिए अपने प्राण को खोता है वह उसे पाता है।" और वह यह भी कहता है," और जो मेरी सेवा करता है पिता उसका आदर करेगा"।

12:31-32

प्रश्न 4. **इस संसार का सरदार कौन है? और उसे निकाल दिया जाएगा का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा तो सब को अपने पास खींच लूंगा।" यीशु मसीह ऊँचे पर उठाया जाने का अर्थ क्रूस पर उसकी मृत्यु,उसका पुनरूत्थान, स्वर्ग पर उठा लिया जाना और स्वर्ग में उसका विराजमान होना है। यीशु की क्रूस पर मृत्यु संसार का न्याय और शैतान से उसका संसार पर अधिकार छीन लेना है।

(1) संसार का न्याय।

जिस "संसार" के बारे में यीशु बात कर रहे हैं वह सम्पूर्ण धरती नहीं, वरन केवल संसार में उसे अस्विकार करने वाले लोग व उसकी निन्दा करने वाले उनके अगुवे हैं। वह संसार यहूदा का संसार है, जिसने उसके साथ विश्वासघात किया; वह उस सैनिक का संसार है, जिसने उसका मज़ाक बनाया; यह पिलातुस का संसार है, जिसने उसे मौत की सज़ा सुनाई और हेरोदेस का संसार था जिसने मसीह को ठट्ठों में उड़ाया। छोटे शब्दों में कहें तो, संसार, बुरे लोगों से मिलकर बना वह समाज है जो बाइबल के परमेश्वर (और शान्ति के राजकुमार) से दूर हैं और जिनका सरदार शैतान है। इस संसार के लोगों ने बिना यह सोचे हुए यीशु पर दोष लगाया और उसे बाहर निकाल दिया, कि उनका यह काम एक दिन खुद उन पर दण्ड लाएगा। अब उस संसार का न्याय होता है, अर्थात उसे अब नरक के अनन्त विनाश में डाल दिया जाता है (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

(2) शैतान को बाहर निकालना।

इस संसार का सरदार शैतान है। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पूर्व शैतान को इस संसार में बहुत शक्ति प्राप्त थी और उसने हमेशा कोशिश की कि परमेश्वर के संदेशवाहक व सेवक उसके कार्य क्षेत्र से दूर ही रहें (दानिय्येल 10:13,20,21)। लेकिन, यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर ही शैतान के कामों को नष्ट कर दिया (1यूहन्ना 3:8) और उसने दुष्टआत्माओं को भगाने (मत्ती 12:28-30), उसकी मृत्यु के द्वारा (कुलुस्सियों 2:15; इब्रानियों 2:14) और पुनरूत्थान, और अपने स्वर्ग पर उठा लिये जाने और स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा (प्रकाशितवाक्य 12:5-9) शैतान को बांध दिया है। अत: वह शैतान का

न्याय करने और उसे दण्ड देने वाला है(यूहन्ना 12:31; 16:11)। शैतान का यीशु मसीह पर कोई अधिकार नहीं था(यूहन्ना 14:30)। शैतान आज भी अविश्वासियों के संसार पर राज्य करता है(1यूहन्ना 5:20), लेकिन उसका संसार के विश्वासियों पर कोई अधिकार नहीं है(1यूहन्ना 5:19)। मसीही लोग शैतान का विरोध कर सकते हैं(याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8-9)। हालांकि आज भी मसीह आज भी शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से लड़ाई लड़ रहे हैं(इफिसियों 6:10-12), लेकिन अब शैतान सुसमाचार को संसार भर के राष्ट्रों तक पहुंचाने से नहीं रोक सकता।(प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

यीशु कहते हैं कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु से "संसार का सरदार संसार से बाहर निकाला जाएगा"। शैतान को इस संसार में उसके अधिकार व शासन से निकाले जाने के परिणाम स्वरूप संसार के लाखों करोड़ों ओर मसीह की ओर खिच कर आ जाएंगे। क्रूस पर यीशु की मृत्यु और उसके मृतकों में से पुनः जीवित होने, उठाये जाने तथा स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के कारण, शैतान जाति जाति के लोगों पर अपना नियन्त्रण खो बैठा है और अब वह उन लोगों को सुसमाचार सुनने तथा उसे स्वीकार करने से नहीं रोक सकता। इस समय के बाद से यीशु धरती की सारी जातियों में से लोगों को शैतान के राज्य में से निकालकर अपने राज्य में प्रवेश करवाएगा(कुलुस्सियों 1:13)।

जो यूनानी यीशु से मिलने के लिए आये थे, उन अनगिनत लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अन्यजातियों में से आयेगें और यीशु मसीह पर विश्वास करेगें। और यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर अब तक, करोड़ों की संख्या में लोग उसके राज्य में प्रवेश कर चुके हैं।

12:37-46

प्रश्न 5. **बाइबल विश्वास और अविश्वास को किस तरह से देखती है?**

ध्यान दें।

(1) बाइबल विश्वास को किस प्रकार देखती है।

फिलिप्पियों 1:29 हमें सिखाता है, "मसीह पर विश्वास करने का दान .... आपको दिया गया है"। और प्रेरितों 13:48 "जितनों को अनन्त जीवन के लिए ठहराया गया था उन्होंने विश्वास किया"। बाइबल हमें नियमित तौर पर सिखाती है कि विश्वास परमेश्वर की ओर से एक वरदान है। विश्वास मनुष्य को काम नहीं है। परमेश्वर हमें विश्वास प्रदान करते हैं और यह मनुष्य का कर्तव्य है कि जो विश्वास परमेश्वर ने उसे दिया है वह उसका इस्तेमाल करें। यूहन्ना 12:42-43 हमें सिखाता है कि सच्चा विश्वास केवल दिमागी सहमति नहीं है, वरन यह मन से विश्वास करने और विश्वास के साथ अपने मुँह से अंगीकार करने का समर्पण है।

(2) बाइबल अविश्वास को किस तरह से देखती है।

यूहन्ना 12:37-40 में यूहन्ना लिखता है, "उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होने उस पर विश्वास नहीं किया ... इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है: "परमेश्वर ने उनकी आँखें अंधी, और उनका मन कठोर कर दिया है; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखे और मन से समझें और फिरें और मैं उन्हें चंगा करूँ"।

बाइबल का परमेश्वर लोगों को उनके अविश्वास के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है। यशायाह 1:2-4 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल की सन्तानों ने परमेश्वर के खिलाफ बलवा किया और भ्रष्ट हो गये। इसलिए, यशायाह 6:9-10 में परमेश्वर ने उन्हें यह कहते हुए उनको दण्ड दिया कि,"तू इन लोगों के मन को मोटा और उनके

कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बन्द कर, ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से बूझें, और मन फिराएं और चंगे हो जाएं।" इस्राएलियों ने बहुत से चमत्कारों को देखा और भविष्यद्वक्ताओं के बहुत से सुन्दर वचनों को सुना था फिर भी, उन्होंने स्वेच्छा से परमेश्वर के प्रति अपनी आँखों को बन्द, कानों को बन्द और अपने अपने हृदयों को कठोर कर लिया। उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया। परमेश्वर ने उनकी आंखों और कानों को और कसकर बन्द कर दिया। आगे को वे न देखने और न ही कुछ सुनने के काबिल थे। उन्होंने जो कुछ अपने आप से बोया था वही उन्होंने काटा(गलातियों 6:7-8)!

ठीक इसी प्रकार से, फरीसियों और बहुत से अन्य यहूदियों ने भी यीशु के अनेकों चमत्कारों को देखा और उसकी शिक्षाओं को सुना, लेकिन फिर भी उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। इसलिए वे भी दोषी ठहरे(मत्ती 13:11-17)।

इसलिए, आज हर एक जन की यह ज़िम्मेदारी है कि वह बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर दे। उसकी यह ज़िम्मेदारी है कि वह यीशु मसीह की बातों, उसके जीवन,मृत्यु और पुनरूत्थान का प्रतिउत्तर दे। यदि किसी व्यक्ति का स्वभाव फरीसी की तरह है और वह लगातार मसीह की आलोचना करता है (मत्ती 12:2,7,10,14,24) तो उसका हृदय भी कठोर कर दिया जाएगा और वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा।

लेकिन यदि कोई जन, ईमानदारी के साथ परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देता है, तो उसे किसी भी तरह डरने की ज़रूरत नहीं है। हर एक भला और शुद्ध हृदय परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देगा, बढ़ेगा और फलवन्त होगा(मत्ती 13:23; मरकुस 4:20; लूका 8:15)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 12:1-50 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 12:1-50 से सम्भव अनुप्रयोगों के उदारहण।

12:3। कई बार मरियम के समान बड़ी रकम के खर्च किये जाने से यीशु मसीह को आदर मिलता है।

12:6। सावधान रहें कि जब आपको धन या वाणिज्य विभाग की जिम्मेदारी सौंपी जाए तो आप यहूदा के समान बेईमान न बनें।

12:10। यदि यीशु मसीह के शत्रुओं ने उसे मारने के लिए षड़यन्त्र किया था, तो वह मसीहियों को मारने का भी षड़यन्त्र बनाएगा। तैयार रहें।

12:16। यीशु मसीह को उस नज़रिये से न देखें जिस नज़रिये से यहूदी अगुवों ने यीशु मसीह को देखा था। वे केवल अपने धर्मशास्त्र से ही अनजान थे(मत्ती 22:29; यूहन्ना 5:39), वरन उन्होंने अपनी ही रीतियों को नयी धार्मिक पुस्तक में तबदील कर दिया!

12:17,19। सामान्य तौर पर धार्मिक अगुवे नहीं वरन, साधारण लोग ही यीशु मसीह के वचनों को दूसरों में बांटते हैं। होने दें कि साधारण लोग सुसमाचार लोगों में फैलाने पाएं।

12:20-21। अगर धार्मिक अगुवे यीशु मसीह को स्वीकार न भी करें तौभी साधारण लोग उसे जरूर स्वीकार करेगें। साधारण लोगों को मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें।

12:24-25। अपना इनकार करना और मसीह के लिए कष्टों को सहना मसीहियों के दो महत्वपूर्ण सदगुण हैं।

12:31-32। संसार भर में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें, क्योंकि मसीह उन्हें अपनी ओर खींच रहा है।

12:42-43 सच्चा विश्वास करने वाले लोग सताव सहने के बावजूद अपने मुंह से अंगीकार करेगें कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

12:48। अन्त के दिनों में सुसमाचार का सन्देश या तो लोगों को धर्मी ठहरायेगा या दोषी।

2. यूहन्ना 12:1-50 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं अपने जीवन में यीशु मसीह को पहला स्थान देना चाहता हूँ। मैंने अपने आप से यह प्रण किया है कि मैं अपने जीवन में यीशु को ही पहला स्थान दूंगा अपने माता पिता को, शिक्षक को, या कम्पनी को, या सरकार को, या सरकारी अगुवों को नहीं। यदि यीशु मसीह की आज्ञाओं को मेरे माता पिता, शिक्षकों,कम्पनी या सरकारी अधिकारियों की मांग में कोई विरोधाभास उत्पन्न होता है तो मैं यीशु की आज्ञा पालन करना पसन्द करूंगा।

मैं हर तरह से यीशु मसीह की सेवा करना चाहता हूँ, चाहे वह रास्ता अपने आप का इनकार करने और कष्टों को ही क्यों न हो। मैंने प्रण किया है कि मैं अपना क्रूस उठाकर यीशु का अनुसरण करूंगा। मैं इस संसार में रहते हुए यीशु मसीह और उसके राज्य के लिए कष्टों, तिरस्कार, सताव और मृत्यु तक सहने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मैं हमेशा याद रखना चाहता हूँ कि क्रूस का रास्ता मुकुट की ओर जाता है। केवल सेवा करते हुए ही मेरे जीवन का उद्धार हो सकता है! केवल सेवा और कष्ट सहने की राह में पिता मेरा आदर करेगा!

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 12:1-50 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।

(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें(रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 12 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें,शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 15:1-18:17** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(5) विश्वासयोग्य बने रहो। नीतिवचन 3:3-4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।